भारतीय भाषाओं को कितना खतरा ?

प्रो. जोगा सिंह
jogasinghvirk@yahoo.co.in

अंग्रेजों के भारत छोड़ने के 65 वर्ष पश्चात भी भारत में उन मुद्दों पर बहस करनी पड़ रही है जो मुद्दे स्वतंत्रता आन्दोलन की अगुवाई कर रहे सेनानी स्वतंत्रता से पहले ही निपटा चुके थे और उन पर स्पष्ट नीतियों का ऐलान कर चुके थे। इन नीतियों में से एक क्षेत्र भाषा नीति का था। कांग्रेस पार्टी ने 1929 में अपने लाहौर सैशन में ही इस बारे में स्पष्ट एलान किया था कि स्वतंत्रता के पश्चात भारत में मातृ भाषाओं को शिक्षा और प्रशासन का आधार बनाया जाएगा और भारतीय भाषाओं को उच्च स्तरीय कार्यों के लिए सक्षम बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाये जाएँगे। शहीद भगत सिंह तो 15 वर्ष की उम्र में ही यह समझ प्राप्त कर चुके थे और लिख चुके थे कि 'पंजाब में पंजाबी भाषा के बिना आगे नहीं बढ़ा जा सकता'। गाँधी जी ने तो 1938 में ही स्पष्ट कहा था कि "क्षेत्रीय भाषाओं को उन का आधिकारिक स्थान देते हुए शिक्षा का माध्यम हर अवस्था में तुरंत बदला जाना चाहिए।" एक और अवसर पर उन्होंने कहा था कि 'अंग्रेज़ी भाषा के मोह से निजात पाना स्वाधीनता के सब से ज़रूरी उद्देश्यों में से एक है। स्वतंत्रता के पश्चात कुछ भारतीय भाषाओं के विकास के लिए प्रयत्न भी हुए और इस से शिक्षा इत्यादि में अच्छे नतीजे भी प्राप्त हुए। पर 1980 के आस-पास इस सारे रुझान को उल्टी दिशा दी जाने लगी।1990 के बाद से तो अंग्रेज़ी भाषा ने भारतीय मातृ-भाषाओं को शिक्षा से बाहर ही निकालना शुरू कर दिया। पिछली सदी के खत्म होने तक ऐसी स्थितियाँ पैदा हो गईं कि पंजाबी जैसी पुरातन और विकसित भाषा का अस्तित्व खतरे में पड़ने के बारे में भी चिंता भरे बयान सामने आने लगे। 21वीं सदी के पहले दशक के मध्य ही में समाचारपत्रों में ऐसे बयान आने लगे कि संयुक्त राष्ट्र संघ की शैक्षिक, सांस्कृतिक और सामजिक मामलों से सम्बन्धित एजेन्सी यूनेस्को ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि पंजाबी 50 वर्षों में लोप हो जाने वाली है। यूनेस्को नें पंजाबी के बारे में तो ऐसा कोई बयान नहीं दिया था, पर यूनेस्को ने कुछ ऐसे मानदंड निर्धारित किए थे जिन के आधार पर किसी भाषा के सम्मुख खतरों के बारे में वैज्ञानिक ढंग से निर्णय किया जा सकता हो। इन मानदंडों के आधार पर ही शायद यह प्रभाव बना था कि पंजाबी भाषा का भविष्य अच्छा नहीं।ऐसे प्रभावों में से पैदा हुए बय़ानों के सामने आने के समय से ही पंजाबी के बारे में यह चर्चा लगातार चल रही है कि पंजाबी भाषा का भविष्य क्या है? भले ही यूनेस्को ने पंजाबी के बारे में ऐसा कोई बयान नहीं दिया पर यह तथ्य अपने-आप में बहुत महत्वपूर्ण है कि पंजाबी के बारे में ऐसा प्रभाव बन सकता है कि पंजाबी को भी यूनेस्को की लोप होने वाली भाषाओं की सूची से जोड़ा जा सकता हो। यह स्थिति केवल पंजाबी भाषा की ही नहीं है, सभी भारतीय भाषाएँ इस स्थिति से गुज़र रही हैं और जीवन के लिए संघर्ष कर रही हैं। इससे भारी शैक्षिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक नुक्सान हो रहे हैं।

अतः ऐसी स्थिति में यह भारतीयों के सामने लाना ज़रूरी हो जाता है कि किसी भाषा की स्थिति के बारे में निर्णय करने के लिए क्या मानदंड हैं और इन मानदंडों के आधार पर भारतीय भाषाओं की क्या स्थिति है? इस दस्तावेज़ में किया गया आंकलन उन सभी भारतीय भाषाओं पर लागू होता है जिनका प्रयोग राज भाषाओं के

रूप में हो रहा है। जो भारतीय भाषाएँ राजभाषाएँ नहीं हैं उनकी दुर्दशा के बारे में तो बात न करना ही अच्छा होगा। इनमें से बहुत सी तो आखरी सांस ले रही हैं।

किसी भाषा की सबल अथवा कमज़ोर अवस्था का पता लगाने के लिए यूनेस्को के 2003 में छपे दस्तावेज़ (भाषीय प्राणशक्ति और खतरे की अवस्था) में निचले 9 कारक दिये गए हैं, जिन के आधार पर किसी भाषा की ताकत अथवा उस पर छाये संकट को आंका जा सकता है:

1. पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचार
2. बोलने वालों की गिनती
3. कुल आबादी में बोलने वालों का अनुपात
4. भाषीय प्रयोग के क्षेत्रों में प्रचलन
5. नए क्षेत्रों और संचार माध्यमों की स्वीकृति
6. भाषीय शिक्षा और साक्षरता के लिए सामग्री उपलब्ध होना
7. सरकारों और संस्थानों का भाषा के प्रति रवैया और नीतियां (सरकारी रुतबा और प्रयोग सहित)
8. भाषीय समूह की ओर से अपनी भाषा के प्रति रवैया
9. प्रलेखीकरण की किस्म और गुणवत्ता

यूनेस्को की सम्बन्धित रिपोर्ट के अनुसार किसी भी भाषा पर खतरे को उपर दिए नौ कारकों के आधार और नीचे दिए छ: दर्जों में बांटा जा सकता है (देखिए, यूनेस्को 2003:8):

1. लोप होने का कोई खतरा नहीं
2. लोप होने का खतरा है
3. लोप होने का गंभीर खतरा है
4. लोप होने का बहुत गंभीर खतरा है
5. लोप होने वाली है
6. लोप हो चुकी है

यूनेस्को की सम्बन्धित रिपोर्ट के अनुसार किसी भी भाषा को पीछे दिये नौ कारकों में से हर कारक के आधार पर उपर दी गई छ: अवस्थाओं में सें एक में रक्खा जा सकता है। सम्बन्धित कारकों और सम्बन्धित अवस्थाओं की अनुसारता का विवरण आगे दिया गया है और इन आधारों पर भारतीय भाषाओं की स्थिति को आंका गया है।

कारक – अ : पीढ़ी दर पीढ़ी संचार और भारतीय भाषाएँ

यूनेस्को की रिपोर्ट (2003:7-8) पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचार कारक के आधार पर किसी भाषा की अवस्था को नीचे दी गयी छ: अवस्थाओं में से एक निर्धारित करती है (यूनेस्को 2003:7-8):

क्रमांक	खतरे का स्तर	**दर्जा**	**संचार की स्थिति**
अ.1	लोप होने का कोई खतरा नहीं	5	कोई भी भाषा खतरे से बाहर है यदि सारी पीढ़ियाँ उस का प्रयोग कर रही हैं और किसी और भाषा का दखल नहीं है।

अ.1.1	स्थिर पर भारी दबाव में	4½	यह वह अवस्था है जब सारी पीढ़ियाँ सारे क्षेत्रों में सम्बन्धित भाषा का प्रयोग करतीं हैं पर कोई और भाषा कुछ विशिष्ट क्षेत्रों को हथिया चुकी है।
अ.2	लोप होने का खतरा है	4	समूह के ज्यादा बच्चे अथवा परिवार सम्बन्धित भाषा पहली भाषा के तौर पर बोलते हैं और कुछ नहीं बोलते, पर यह प्रयोग कुछ विशिष्ट सामाजिक घेरों तक सीमित हो जाता है (जैसे कि परिवार में)।
अ.3	लोप होने का गंभीर खतरा	3	बच्चे घर में अपनी भाषा सीखना बंद कर चुके हैं। सिर्फ माँ-बाप ही अपनी भाषा बोलते हैं पर ज़रूरी नहीं कि बच्चे अपनी भाषा में ही जवाब दें।
अ.4	लोप होने का बहुत गंभीर खतरा है	2	दादा-दादी और वृद्ध पीढ़ी ही भाषा बोलती है। माँ-बाप की पीढ़ी अपनी भाषा समझती तो है पर बच्चों से इस में बात नहीं करती।
अ.5	लोप होने वाली है	1	अपनी भाषा का सब से छोटी उम्र की व्यक्ति परदादा-परदादा ही है। उन को अपनी भाषा कुछ याद तो है पर इस का प्रयोग नहीं करते, क्योंकि कोई है ही नहीं जिस से वह बोल सकें।
अ.6	लोप हो चुकी है	0	एक भी व्यक्ति नहीं है जो अपनी भाषा बोल अथवा समझ पाता है।

भारत में अलग - अलग भुगौलिक भाषीय प्रसंगों में रह रहे भारतीयों को दो वर्गों में बँटा जा सकता है:

1.सम्बन्धित भाषाई प्रदेश के निवासी

2.सम्बन्धित भाषाई प्रदेश से बाहर के निवासी

पर एक बात इन दोनों वर्गों के भारतीयों में समान है कि इन दोनों ही वर्गों के बच्चों के जीवन में कोई और प्रभुत्वशाली भाषा मात्रा की हिसाब से कम या ज्यादा दखल दे चुकी है। सम्बन्धित भाषाई प्रदेशों से बाहर युवा पीढ़ी में मातृ भाषाओं का प्रयोग गैर-औपचारिक क्षेत्रों में ही हो रहा है।सम्बन्धित प्रदेशों में भारतीय भाषाओं का पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचार अच्छा ज़रूर है पर आदर्श रूप में यहाँ भी नहीं। बहुत क्षेत्र है जहाँ सम्बन्धित भाषा का प्रयोग नहीं हो रहा अथवा कम हो रहा है। इन में सब से बड़ा क्षेत्र स्कूली शिक्षा का है। प्रभुत्वशाली वर्ग के लगभग सारे बच्चे प्रारंभिक स्तर से ही अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में जा रहे हैं। इन विद्यालयों में भारतीय भाषाएँ विषय के रूप में अधूरे से ढंग से ही पढ़ाई जा रही हैं। जैसे कि लेखक पहले ही अपने एक लेख में दर्ज कर चुका है, इन विद्यालयों में से निकल रहे बच्चों को भारतीय भाषी बच्चे कहना भी उचित नहीं है क्योंकि स्कूली शिक्षा खत्म करने के बाद इन बच्चों की भाषीय क्षमता किसी भारतीय भाषा से अंग्रेज़ी भाषा में बेहतर होती है (यह अलग बात है कि वह भी सीमित सी ही है)।

सो, अगली पीढ़ी में भारतीय भाषाओं का सफल संचार बड़े दबावों में है।

कारक ब : बोलने वालों की गिनती: ऐसी कोई निर्धारित गिनती नहीं है जिस के आधार पर किसी भाषा को ख़त्म होने के खतरे से रिक्त समझा जाए। यह ज़रूर है कि बोलने वालों की बड़ी गिनती किसी भाषा के जीवन को खतरा कम करती है। भारतीय भाषाओं के प्रसंग में देखा जाए तो भारत की राज भाषाएँ दुनिया की बड़ी भाषाओं में है। सो, बोलने वालों की गिनती भारतीय भाषाओं की बहुत बड़ी ताक़त है।

कारक स : कुल भाषीय आबादी में बोलने वालों की गिनती का अनुपात

किसी समूह की कुल आबादी में कितने लोग अपनी भाषा बोलते हैं यह किसी भाषा की प्राणशक्ति का बड़ा संकेत देता है।(यूनेस्को 2003:9):

खतरे का स्तर	दर्जा	कुल सम्बन्धित आबादी में बोलने वालों का अनुपात
कोई खतरा नहीं	5	सभी (all) अपनी भाषा बोलते हैं
खतरा है	4	लगभग सभी (nearly all) अपनी भाषा बोलते हैं
गंभीर खतरा है	3	बहुमत (a majority) अपनी भाषा बोलता है
बहुत गंभीर खतरा है	2	अल्पमत (a minority) अपनी भाषा बोलता है
लोप होने वाली है	1	बहुत कम (very few) अपनी भाषा बोलते हैं
लोप हो चुकी है	0	बोलने वाला कोई भी नहीं रहा।

उपरोक्त पैमाने पर भारतीय राज भाषाओं का दर्जा निश्चित रूप में तो एक वैज्ञानिक सर्वेक्षण के बाद ही अंकित किया जा सकता है, पर प्रभावी रूप से इनकी स्थिति 4 और 3 दर्जे के बीच की लगती है।

कारक द : भाषीय प्रयोग के क्षेत्रों में प्रचलन

यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार यह स्थितियाँ इस तरह की हो सकती हैं (यूनेस्को 2003:10):

खतरे का स्तर	दर्जा	भाषीय क्षेत्र और भाषीय कार्य
सर्वव्यापक प्रयोग	5	भाषा का प्रयोग सभी क्षेत्रों (domains) और सभी कार्यों (functions) के लिए होता है।
बहुभाषी समानता	4	ज्यादा (most) सामाजिक क्षेत्रों और ज्यादा कार्यों के लिए एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग होता है।
लोप हो रहे क्षेत्र	3	भाषा का प्रयोग पारिवारिक क्षेत्रों और बहुत (many) कार्यों के लिए होता है, पर प्रभुत्वशाली भाषा पारिवारिक क्षेत्रों में भी दखल देने लगी है।
सीमित और गैर-औपचारिक क्षेत्र	2	भाषा का प्रयोग बहुत ही सीमत सामाजिक क्षेत्रों और कई (several) कार्यों के लिए होता है।
बहुत ही सीमित क्षेत्र	1	भाषा का प्रयोग बहुत ही सीमित क्षेत्रों में और कुछ ही (very few) कार्यों के ही लिए होता है।
खत्म हो चुकी	0	भाषा का प्रयोग किसी भी क्षेत्र में और किसी भी कार्य के लिए नहीं होता।

ज्यादा विस्तार में जाने बिना ही कहा जा सकता है कि भाषीय प्रयोग के सारे क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं के प्रचलन के आधार पर भारतीय भाषाएँ दर्जा 3 पर आकर खड़ी हो गई हैं, क्योंकि सम्बंधित भाषीय प्रदेशों में भी पारिवारिक क्षेत्रों में हिन्दी और अंग्रेज़ी का दखल बढ़ रहा है। यदि भाषीय प्रदेशों की यह अवस्था है जहाँ भारतीय भाषाएँ बाकी भुगौलिक क्षेत्रों के मुकाबले बेहतर स्थिति में है तो दूसरे भौगोलिक क्षेत्रों में तो स्थिति और भी चिंतातुर होगी।

कारक - क : नये क्षेत्रों और संचार माध्यमों को स्वीकृति

नीचे दी गई सारणी यूनेस्को की रिपोर्ट को रूपमान करती है (यूनेस्को 2003:11)। नये क्षेत्रों से भाव टैलीविज़न, इंटरनेट इत्यादि से है।

खतरे का स्तर	**दर्जा**	**नए क्षेत्रों और संचार माध्यमों में प्रयोग**
विकासशील (dynamic)	5	भाषा का प्रयोग सभी नए क्षेत्रों में होता है।
बलवान/सक्रिय (robust/active)	4	भाषा का प्रयोग लगभग सभी नए क्षेत्रों में होता है।
ग्रहणशील (receptive)	3	भाषा का प्रयोग काफी नए क्षेत्रों में होता है।
मुकाबला कर रही है (coping)	2	भाषा का प्रयोग कुछ नए क्षेत्रों मे होता है।
बहुत ही कम (minimal)	1	भाषा का प्रयोग केवल कुछ ही नए क्षेत्रों में होता है।
निष्क्रिय (inactive)	0	भाषा का प्रयोग किसी भी नए क्षेत्र में नहीं होता।

यह सही है कि भारतीय राज भाषाओं का प्रयोग हर नये क्षेत्र में हो रहा है , पर यहाँ भी दूसरी भाषाएँ (हिंदी भाषी क्षेत्रों में अंग्रेज़ी और गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों) मातृ भाषाओं से अभी ज्यादा प्रयोग में है। इसलिए स्थिति यहाँ भी आदर्श नहीं है।

कारक -ख : भाषीय शिक्षा और साक्षरता के लिए सामग्री

सम्बन्धित रिपोर्ट के अनुसार भाषीय प्राणशक्ति के लिए उस भाषा के द्वारा शिक्षा का होना आवश्यक है (पृष्ठ 12) भाषीय शिक्षा और साक्षरता के कारक के आधार पर यूनेस्को की रिपोर्ट किसी भाषा की ताकत को आंकने के लिए निम्न लिखित सारणी देता है:

दर्जा	**लिखित सामग्री की मौजूदगी**
5	भाषा की कोई स्थापित लिपि और साहित्यिक परंपरा है और व्याकरणों, शब्द कोषों , पुस्तकों, साहित्य और दैनिक संचार माध्यम का स्रोत हासिल है। भाषीय लिखावटों का प्रशासन और शिक्षा में प्रयोग हो रहा है।
4	लिखित सामग्री हासिल है और बच्चे विद्यालयों में भाषा में साक्षरता हासिल कर रहे हैं। प्रशासन में भाषा का प्रयोग नहीं होता।
3	लिखित सामग्री प्राप्त है और हो सकता है कि बच्चे विद्यालय में भाषा साक्षरता हासिल कर रहे हैं। प्रकाशन माध्यम के द्वारा साक्षरता का विकास नहीं किया जा रहा।
2	लिखित सामग्री की मौजूदगी है पर समूह के कुछ सदस्यों के लिए इसका प्रयोग सक्षम नहीं है। दूसरों के लिए इस का अस्तित्व प्रतीक मात्र है। सम्बन्धित भाषा में साक्षरता शिक्षा विद्यालय का हिस्सा नहीं है।

भारतीय भाषाओं की स्थिति दर्जा 5 और 4 के बीच की है क्योंकि ये न तो सारे विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम है और न ही प्रशासन में मुकम्मल तौर पर इन का प्रयोग हो रहा है।

कारक - ग : सरकारों और संस्थानों का भाषा के प्रति व्यवहार और नीतियां, सरकारी रुतबा और प्रयोग सहित

सरकारी और संस्थागत व्यवहार और नीतियों के आधार पर निम्न सारणी किसी भाषा की जीवनशक्ति का अक्स पेश करती है:

संरक्षण का स्तर	दर्जा	भाषा की तरफ़ सरकारी व्यवहार।
सभी भाषाओं को बराबर संरक्षण	5	सब भाषाओं को संरक्षण हासिल है।
संरक्षण बराबर नहीं	4	अल्पसंख्यक भाषाओं की गैर-औपचारिक क्षेत्रों में भी रक्षा हो रही है। सम्बन्धित भाषा के प्रयोग को सम्मान हासिल है।
चुपचाप आत्मसात	3	अल्पसंख्यक भाषाओं के लिए प्रत्यक्ष नीती का अभाव है। औपचारिक क्षेत्रों में प्रभुत्वशाली भाषा का कब्जा।
क्रियाशील आत्मसात	2	सरकार की ओर से भाषा के प्रभुत्वशाली भाषा में आत्मसात होने को उत्साहित किया जाता है। अल्पसंख्यक भाषाओं के लिए कोई संरक्षण नहीं है।
बलपूर्वक आत्मसात	1	प्रभुत्वशाली भाषा अकेली ही सरकारी भाषा है, जबकि गैर सरकारी भाषाओं को न तो मानता है और न ही संरक्षण।
वर्जित	0	अल्पसंख्यक भाषाएँ वर्जित हैं।

भारतीय भाषाओं के प्रति सरकारी क्षेत्रों का व्यवहार कोई उत्साहजनक नहीं है। सरकारी कार्यालयों और संस्थाओं में राज भाषाओं के प्रयोग के लिए कानून बन जाने के बावजूद भी इन को ईमानदारी से लागू कराने के कोई प्रयत्न नहीं किये जा रहे। यदि कोई हिलजुल होती भी है तो बस जन दबाव के कारण। पंजाब में घटी एक घृणित घटना (जिसका समाचार पत्रों में विवरण दिया गया था) का ज़िक्र स्थिति को समझने में सहायता करेगा। पिछले दिनों पंजाब विधान सभा में प्रतिद्वंदी पक्ष (कांग्रेस पार्टी) के नेता माननीय सुनील जाखड़ जी ने अंग्रेज़ी में बोलना शुरू किया तो एक माननीय सदस्य ने उन को पंजाबी में बोलने की ताकीद की। श्री सुनील जाखड़ जी का जवाब था कि विधान सभा में बैठे सदस्य अंग्रेज़ी समझ सकते हैं। पंजाब विधान सभा के सारे सदस्यों की अंग्रेज़ी भाषा में क्षमता कितनी ही है, इस सवाल पर जाने की तो हमें आवश्यकता नहीं है, पर श्री सुनील जाखड़ जी को यह पूछना बनता है कि पंजाब विधान सभा की बैठक में बात पंजाबी में बेहतर समझाई जा सकती है अथवा अंग्रेज़ी में (लगता है कि सुनील जाखड़ जी समझ और राष्ट्रीय आत्मसम्मान का क्रिया-कर्म करके पंजाब विधान सभा के उस समागम में दाखिल हुए थे)। खैर ! यह घटना भारत में भारतीय भाषाओं की तरफ़ पूरे राजनैतिक और सरकारी व्यवहार का सबूत है।

जहाँ तक सरकारी नीतियों का सवाल है, कुछ भारतीय भाषाएँ राज्यों की राज भाषाएँ तो हैं, पर शिक्षा , प्रशासन और और सरकारी क्षेत्रों में अंग्रेज़ी भाषा का दखल तबाहकुन ढंग से जारी है। ताकतवर वर्ग के सब बच्चे अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में जा रहे हैं और सरकारी विद्यालयों में शिक्षण का लगभग अन्त हो चुका है। इस प्रकार, निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि भारत के विद्यालयों में भारतीय भाषाओं के उल्लेखनीय प्रशिक्षण का लगभग अन्त हो चुका है। इस चलन के परिणाम लगभग सामने हैं। भारत की वर्तमान युवा पीढ़ी में से

भारतीय भाषाओं की उल्लेखनीय निपुणता लगभग खत्म हो चुकी है। इस के शिक्षा, ज्ञान, संस्कृति, साहित्य, संचार तथा और क्षेत्रों के लिए भीषण परिणाम उन को नजर आ रहे हैं जो देख सकते हैं, और वे विलाप भी कर रहे हैं क्योंकि मातृ भाषा के अच्छे प्रशिक्षण और निपुणता के बिना दूसरी अथवा विदेशी भाषा भी सफलता से नहीं सीखी जा सकती, इस लिए यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि वर्तमान में तैयार की जा रही भारतीय पीढ़ी भाषीय विकलांगों की पीढ़ी कहलाएगी, क्योंकि इसको किसी भाषा में भी उल्लेखनीय निपुणता हासिल नहीं होगी।

जहाँ तक सरकारी व्यवहार और नीतियों को अंक देने का सवाल है, यह कहना बनता है कि सरकारी नीतियों में भारतीय भाषाओं को संरक्षण आदर्श रूप में चाहे हासिल नहीं पर हासिल तो है, पर सरकारी व्यवहार के कारण यह नीतियां उचित तरह से चलन में नहीं आ रहीं। इस प्रकार, भारतीय भाषाओं की भारत में भी स्थिति 3 और 4 अंकों के बीच की ही है। यहाँ यह भी बात याद रखने वाली है कि उच्च शिक्षा में विज्ञान, तकनीकी विषयों और पेशेवर कोर्सों में भारतीय भाषाओं का माध्यम के तौर पर पूर्ण अभाव है।

कारक – घ : भाषा समूह का भाषा के प्रति व्यवहार

भाषा क्योंकि एक मानवीय व्यवहार है, इस लिए किसी भाषा समूह का अपनी भाषा के प्रति व्यवहार और प्रयत्न उस भाषा का जीवन, क्षमता, ताक़त, प्रसार और विकास में निर्णायक रोल अदा करते हैं। यह कहना सच्चाई से दूर नहीं कि किसी भाषा की बाकी क्षेत्रों में स्थिति के लिए उस भाषा समूह का अपनी भाषा के प्रति व्यवहार फैसलाकुन रोल अदा करता है। किसी भाषा समूह के व्यवहार को यूनेस्को की रिपोर्ट नीचे दिए वर्गों में बँटती है (यूनेस्को 2003:15):

दर्जा	**भाषा समूह का भाषा के प्रति व्यवहार**
5	सारे व्यक्ति अपनी भाषा का आदर करते हैं और इस की उन्नति देखना चाहते हैं।
4	ज्यादा व्यक्ति अपनी भाषा बरकरार रखने की हिमायत करते हैं।
3	बहुत व्यक्ति अपनी भाषा बरकरार रखने की हिमायत करते हैं; बाक़ी या तो बेपरवाह हैं या अपनी भाषा की समाप्ति तक की हिमायत कर सकते हैं।
2	कुछ ही व्यक्ति अपनी भाषा बरकरार रखने की हिमायत करते हैं; बाक़ी या बेपरवाह है या अपनी भाषा की समाप्ति तक की हमायत कर सकते हैं।
1	केवल इक्का-दुक्का व्यक्ति ही अपनी भाषा बरकरार रखने की हिमायत करते हैं; बाक़ी या बेपरवाह है या अपनी भाषा की समाप्ति तक ही हिमायत कर सकते हैं।
0	कोई भी अपनी भाषा के खत्म होने की परवाह नहीं करता; सभी प्रभुत्वशाली भाषा के प्रयोग को पहल देते हैं।

यह बहुत फिक्र वाली बात है कि उपरोक्त कारक, जो कारक भाषा के जीवन और विकास के लिए सब से महत्वपूर्ण है, उस पक्ष से भी भारतीय भाषाओं की अवस्था उत्साह पैदा करने वाली नहीं है।

भारतीयों के अपनी भाषाओं के प्रति रवैये को देखें तो बड़ी चिंता के कारण हैं। सत्ता, समाज और आर्थिक ढांचे में प्रभुत्वशाली वर्ग की भाषा ही प्रभुत्वशाली भाषा होती है और जनसाधारण उसी भाषा को सम्मानित भाषा समझता है। भारत का ताकतवर वर्ग ज्यादा से ज्यादा अंग्रेज़ी और किसी हद तक हिन्दी की तरफ़ खिंचा जा रहा है। अंग्रेज़ी की ओर खिंचे जाने का बड़ा कारण ताकतवर वर्ग का स्वार्थ है जो अंग्रेज़ी भाषा के द्वारा शिक्षा, सत्ता और आर्थिकता के सभी क्षेत्रों में अपनी धौंस कायम रखना चाहता है। चेतना की कमी के कारण जनसाधारण प्रभुत्वशाली वर्ग की सत्ता और समृद्धि का एक कारण अंग्रेज़ी भाषा को समझे बैठा है। प्रभुत्वशाली वर्ग के स्वार्थ के साथ-साथ राजकीय और प्रशासनिक क्षेत्रों में भाषा नीति के प्रति अज्ञानता भी पौष महीने की अमावस की आधी रात के घोर अँधेरे की तरह छाई हुई है। नतीजे के तौर पर भारतीयों का अपनी भाषाओं के प्रति रवैया, कुछ चेतन्न क्षेत्रों को छोड़ कर, निराशा पैदा करने वाला ही है।

सो, भारतीय भाषाओं की तरक्की की इच्छा रखते हुए भी, भारतीय आबादी अपनी भाषाओं के जीवन और विकास के लिए हिमायती सरगर्मियों में ज्यादा हिस्सा नहीं लेती। इस से भी ज्यादा चिंता वाली बात यह है कि भारत का जनसाधारण भी अंग्रेज़ी और हिन्दी को मातृ भाषाओं से ज्यादा सम्मानित भाषाएँ होने की अभिकल्पना किये बैठा है और भारत में परिवारों में भी अंग्रेज़ी और हिन्दी बोलने का रिवाज वृद्धी की दिशा में है (हिंदी का ज़िक्र गैर-हिंदी भाषा क्षेत्रों के लिए किया जा रहा है)। अंग्रेज़ी भाषी विद्यालयों में बच्चों को भारतीय भाषाएँ बोलने की इजाज़त न होने का तथ्य तो हर कोई जानता ही है।

इसलिये , भारतीयों का अपनी भाषाओं के प्रति रवैया 3-4 अंकों की मध्यस्थिति में ही है।

कारक – च : प्रलेखीकरण की किस्म और गुणवत्ता

भाषा के जीवन और विकास के लिए लिखित सामग्री की मात्रा, किस्म और गुणवत्ता बहुत महत्वपूर्ण है। इस आधार पर यूनेस्को की रिपोर्ट भाषाओं की अवस्था को निचले पाँच वर्गों में बँटती है (यूनेस्को 2003:16):

प्रलेखीकरण का स्तर	दर्जा	भाषा प्रलेखीकरण
उत्तम	5	बड़े कोश और व्याकरणों और विस्तृत पठन-सामग्री हासिल है और भाषा सामग्री लगातार पैदा हो रही है। उच्च दर्जे के और बड़े स्तर पर श्रवणीय और दर्शनीय स्रोत विवरण सहित हासिल हैं।
अच्छा	4	एक अच्छा वयाकरण हासिल है; अपेक्षित व्याकरण, कोश, पठन-सामग्री और साहित्य हासिल हैं; दैनिक संचार माध्यम के स्रोत मौजूद हैं, और उच्च दर्जे के और बड़े स्तर पर श्रवणीय और दर्शनीय स्रोत विवरण सहित हासिल है।
संतोषजनक	3	एक अपेक्षित अथवा कई आम व्याकरण, कोश और पठन-सामग्री हासिल हैं, पर दैनिक संचार माध्यम हासिल नहीं हैं; कमोबेश गुणवत्ता वाला और कमोबेश विवरण सहित श्रवणीय और दर्शनीय स्रोत हासिल हो सकते हैं।
मामूली	2	कुछ व्याकरणिक रूप-रेखाएं, शब्द-सूचियाँ और पठन-सामग्री हासिल हैं जो सीमित से भाषा वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए काम आ सकती हैं, पर इन का क्षेत्र सीमित है। कमोबेश गुणवत्ता वाले (विवरण सहित अथवा विवरण से बिना) श्रवणीय और दर्शनीय स्रोत हासिल हैं।

नाकाफी	1	केवल कुछ ही व्याकरणिक रूप-रेखाएं, संक्षिप्त शब्द-सूचियाँ और टूटी-फूटी पठन-सामग्री हासिल है। श्रवणीय और दर्शनीय स्रोत या तो हासिल नहीं या अनुपयोगी हैं अथवा कोई विवरण नहीं दिये गये।
कोई प्रलेखीकरण नहीं	0	किसी सामग्री का अस्तित्व नहीं है।

और कारकों के मुकाबले प्रलेखीकरण के नज़रिये से भारतीय राज भाषाओं की स्थिति उत्साह देने वाली है। पंजाबी भाषा में बड़ी मात्रा में हवाला सामग्री, पठन-सामग्री और कला सामग्री हासिल है। इन का स्तर चाहे दुनिया की ज्यादा प्रचलित भाषाओं अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन इत्यादि के स्तर का तो नहीं है, पर यह सामग्री भारतीयों की भाषा प्रयोग की आवश्यकताएं पूरी कर सकती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी इत्यादि की वरिष्ठ शिक्षा के लिए सामग्री की कमी ज़रूर है पर यह सामग्री बहुत कम प्रयत्नों से पैदा की जा सकती है, और इस के लिए आधार मौजूद हैं।

सामग्री की मौजूदगी के आधार पर भारतीय भाषाओं की अवस्था 4 और 5 अंकों के दरम्यान रक्खी जा सकती है।

निचोड़: भाषा क्योंकि सामाजिक व्यवहार है, इस लिए भाषीय मसलों को गणितक रूप में पेश करना कठिन है। पर नीचे दी गई सारणी भारतीय भाषाओं की स्थित को समझने में ज़रूर मदद कर सकती है (सारे अंक कुल 5 अंकों में से हैं):

कारक	**कारक का नाम**	**प्रदेश के अन्दर संभावित अंक**	**प्रदेश से बाहर संभावित अंक**
1.	पीढ़ी दर पीढ़ी संचार	4	2
2.	बोलने वालों की गिनती	5	3
3.	कुल आबादी में बोलने वालों का अनुपात	4	2
4.	भाषीय प्रयोग के क्षेत्रो मे प्रचलन	3	2
5.	नए क्षेत्रों और संचार माध्यमों को स्वीकृति	3½	2
6.	भाषीय शिक्षा और साक्षरता के लिए हासिल सामग्री	4½	2
7.	सरकारों और संस्थानों का भाषा के प्रति व्यवहार और नीतियां	3½	2
8.	प्रलेखीकरण की किस्म और गुणवत्ता	4½	3
9.	भाषीय समूह का भाषीय व्यवहार	3½	3
	जोड़ 9x5=45 में से	35½	20

भारतीय भाषाओं का भविष्य : भारतीय भाषाओं को प्यार करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह आँकड़े बहुत डर पैदा करना वाले हैं क्योंकि पूरी तरह सुरक्षित वही भाषा ही कही जा सकती है जो 45 में से 45 अंक प्राप्त करती हो, या इस आँकड़े के करीब हो। यहाँ यह सवाल किया जा सकता है कि यदि भारतीय भाषाए सदियों से कायम है तो भविष्य में इन्हें इतना बड़ा खतरा क्यों है ?

ऐसे सवाल का जवाब इन पंक्तियों का लेखक अपने एक लेख में पहले भी पंजाबी भाषा के संदर्भ में दे चुका है। यहाँ वह जवाब ही दुहराया जा रहा है। भारतीय उप-महाद्वीप की स्वतंत्रता के बाद की भाषिक स्थिति पहले समय से बदल गयी है। शिक्षा, प्रशासन और संचार माध्यमों के सीमित प्रसार के कारण स्वतंत्रता से पहले भारतीय उप-महाद्वीप की लगभग समूह आबादी अपनी मातृ भाषाओं के भाषिक प्रसंग में ही विचरती थी। पर स्वतंत्रता के पशचात स्कूली शिक्षा, प्रशासन और संचार माध्यमों का बड़ा प्रसार हुआ है, और इस प्रसार से भारतीय आबादी का गैर-भारतीय भाषाओं से बहुत बड़े स्तर पर पाला पड़ा है। और, बदकिस्मती से, इन दूसरी भाषाओं को सरकार की और से मातृ भाषाओं से कहीं बड़ा संरक्षण हासिल है।

भारत में 80 के दशक तक अवस्था कुछ अच्छी थी। पर 80 के पशचात प्रभुत्वशाली वर्ग की अक्ल (और नीयत) भ्रष्ट हो गयी है। मातृ भाषा और शिक्षा के बारे में दुनिया के किसी भी विशेषज्ञ का एक भी शब्द अपने कानों में और आँखों में न पड़ने देने की इस ने कसम खाई हुई लगती है। परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं को शैक्षिक, प्रशासनिक, आर्थिक, सामाजिक तथा दूसरे क्षेत्रों से बाहर निकाल फेंकने के लिए यह वर्ग कोई कसर बाक़ी नहीं छोड़ रहा। यह बात बुरी लग सकती है, पर सत्य यही है कि भारतीय उप-महाद्वीप की मातृ भाषाओं को जो दुर्दशा स्वतंत्रता के बाद हुई है वह पहले कभी भी नहीं हुई थी। विदेशी भाषा अंग्रेज़ी को हर क्षेत्र में ऊँचा दर्जा दिये जाने के कारण जनसाधारण को अपनी भाषाओं की शक्ति पर भी संदिग्धता होने लगी है और भाषाई दिमागी ग़ुलामी स्वतंत्रता से पहले से भी गहरी हो गयी है। जन साधारण प्रभुत्वशाली वर्ग का ही अनुगामी होता है और प्रभुत्वशाली वर्ग का यह हाल है कि यदि इसका वश चले तो यह शायद अपने पूर्वजों के नाम भी इस प्रकार बदल लें कि वह अंग्रेज लगने लगें। इन बदली हुई अवस्थाओं के कारण ही भारतीय उप-महाद्वीप की वर्तमान मातृ भाषाएँ पहले तो सदियों से जीवित और पनपती रही हैं, पर अब उन को अंग्रेज़ी(और हिन्दी) के गैस चैंबरों में डाल दिया गया है और इन का लोप हो जाने का खतरा हक़ीकत बन गया है। प्रिय भारतीयो! क्या स्वतंत्रता इसी के लिए थी ?

यह भी कई बार सुनने को मिलता है कि जिन भाषाओं में महान ग्रन्थ और रचनाएँ विद्यमान हो, या जिन में ऋषियों-मुनियों का संदेश दर्ज हो वह भाषा कभी नहीं मर सकती। यह आशा अच्छी है, और सहारा बड़ा है, पर यह नहीं भूलना चाहिए कि वेद, उपनिषद और पुराण संस्कृत में रचे गए थे। पर फिर भी संस्कृत केवल किताबों में ही पड़ी मिलती है, जिन को पढ़ भी बहुत ही कम व्यक्ति सकते हैं। बौद्ध ग्रन्थ पाली में लिखे गए थे पर पाली कहाँ है? बाईबल हिब्रू में रची गई थी पर हिब्रू को भारी सरकारी प्रयत्नों के बाद ही जिन्दा किया जा सका है। सारे यूरोप की ज्ञान की भाषा लातीनी थी, जिसका ज्यादा लोग तो अब नाम भी नहीं जानते।

कोई विकास दरों का वकील यह सवाल भी कर सकता है कि आखिर मातृ भाषाओं को बचाने का लाभ ही क्या है? वैसे तो यह सवाल ऐसा ही है जैसे किसी की माँ गंभीर रूप से बीमार पड़ी हो और पूछा जाए कि आखिर

उसे बचाने का क्या आर्थिक लाभ है; पर फिर भी सवाल तो सवाल ही है, चाहे कितना भी बेहूदा क्यों न हो। सो, जवाब देना बनता है। जवाब बहुत सरल भी है। ऐसे प्रशनकरता से मेरा बस अनुरोध है कि अपनी आँखें खोलने की कृपा करे और सारे देशों पर नज़र डाले कि मातृ भाषाओं को माँ मानने वाले देश दूसरों के मुकाबले आगे हैं या पीछे। यदि वास्तव में हिसाब न लगया जा सके तो भाषा नीती और शिक्षा के किसी विषेशज्ञ के चार अक्षर पढ़ने की कृपा करे। यदि फिर भी संतुष्टि न हो तो दुनियां में अंग्रेज़ी पढ़ाने के लिए इगलैंड के संस्थान बृटिश काउन्सिल के किसी कार्यालय में जाए और उन के भाषा विषेशज्ञ से पूछे कि विदेशी भाषा (हमारे लिए अंग्रेजी) पहले कुछ वर्ष मातृ भाषा माध्यम में पढ़ कर अच्छी आती है या सीधे ही विदेशी भाषा के कुएँ में कूद कर। यदि फिर भी मन न माने ('मैं न मानूं' वाले के मन को मना भी कौन सकता है) तो जहां कहीं भी रेल की पटरी हो, वहाँ पहुँच जाए। उस पर मरना बहुत आसान है। धरती माँ का कुछ भार तो हल्का होगा। हाँ, यह गारंटी नहीं दी जा सकती कि प्रशनकरता के बच्चे अंग्रेज़ी में रोएंगे।

जाते-जाते कुछ तथ्य और। इस लेख में यूनेस्को की ऐसी रिपोर्ट को आंकलन का आधार बनाया गया है जो भाषाओं के लोप होने के खतरे के लक्षणों का लेखा-जोखा करती है। भारतीय भाषाओं जैसी बड़ी समृद्ध भाषाओं के वारिसों को तो इस सवाल पर चर्चा करने की आवश्यकता पड़ जाने पर भी उदासी होनी चाहिए। भारतीय भाषाओं जैसी महान भाषाओं के वारिसों के लिए तो आवश्यकता इस सवाल पर चर्चा करने की होनी चाहिए कि भारतीय भाषाओं को अंग्रेज़ी फ्रांसीसी, जर्मन, चीनी, अरबी, स्पेनी जैसी ज्यादा चर्चित भाषाओं के बराबर का रुतबा वर्तमान में कैसे दिलवाया जाए। यह बहुत थोड़े सामूहिक प्रयत्नों से संभव है। आवश्यकता बस इस के लिए कायल होने की है। इंटरनैट्ट और कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी ने हर भाषा के बोलने वालों के हाथ में ऐसा हथियार दे दिया है कि किसी भी भाषा को पहले से कहीं कम प्रयत्नों से ऊँचाई पर पहुँचाया जा सकता है। यहाँ हिब्रू भाषा की मिसाल उत्साह देने वाली है। बाईबल की भाषा हिब्रू बोल-चाल में से लोप हो चुकी भाषा थी। पर यहूदी समूह ने विद्यालयों में अपने साधारण से प्रयत्नो से इस को जीवंत भाषा बना दिया है। ऐसे ही यूनेस्को ने अपने प्रयत्नो से कई और भाषाओं को लोप होने से बचाकर विकास के मार्ग पा ला दिया है। मेघालय की एक भाषा खासी जो एक समय यूनेस्को की खतरे में भाषाओं की सूची में शामिल थी अब उस सूची में से निकाल दी गयी है। इसका बड़ा कारण मेघालय सरकार की ओर से खासी को सरकारी काम-काज की भाषाओं में शामिल करने के कारण हुआ है। इस के परिणाम स्वरूप खासी का प्रयोग भिन्न भिन्न क्षेत्रों (जैसे स्कूली शिक्षा, रेडियो, टैलीविज़न इत्यादि) में होने लगा है और यह जीवंत भाषा बन गयी है।

मेरा यह भी अनुरोध है कि यूनेस्को के रिपोर्ट की दुहाई को 'शेर आया-शेर आया' ही न समझ लिया जाए। मेरी समझ में यदि इस रिपोर्ट के आधारों पर भारतीय राज भाषाओं की कोई चार दशक पहले की अवस्था को आंका जाए तो वे आज के मुल्यांकन से ज्यादा अंक प्राप्त करेंगी। यह सबूत ही यह जानने का लिए काफी है कि भारतीय भाषाओं की दिशा किस ओर है, विनाश की तरफ़ अथवा विकास की तरफ़। भारतीय भाषाओं के लोप हो जाने के डर का ज़िक्र ही अपने आप में सबूत है कि डर पैदा करने वाले संकेत मौजूद हैं। ध्यान में रखने वाली सच्चाई यह है कि यूनेस्को की ओर से बताये 9 कारकों में केवल एक कारक (बोलने वालों की गिनती) ही ऐसा कारक है जिस के आधार पर भारतीय भाषाएँ खतरे से बाहर कही जा सकती है। पर पूरा मुल्यांकन केवल एक कारक के आधार पर नहीं किया जा सकता। इस लेख का मकसद कोई एकतरफा निर्णय देना भी नहीं है। भाषा एक सामाजिक व्यवहार है और इस के बारे में अंदाजों में अन्तर्मुखता के कुछ तत्व समाविष्ट होना स्वाभाविक है। इस लिए आवश्यकता है कि यूनेस्को की ओर से पेश कारणों के आधार पर भारतीय भाषाओं की स्थिति का और

गहन और विस्तृत मुल्यांकन किया जाए। यह सुझाव भी उचित होगा कि भाषा विशेषज्ञ और भारतीय भाषाओं के विशेषज्ञ मिल कर सम्बन्धित मुद्दों पर गहरी विचार-चर्चा कर राय बनाएं, जो भारतीयों को इन सवालों के बारे में स्पष्टता प्रदान कराए। यह स्पष्टता भारतीय भाषाओं के लिए आवश्यक प्रयत्नों नींव रखने में सहायक होगी। यह एक सच्चाई है कि भारतीय भाषाओं को दिन-ब-दिन बड़ा नुकसान हो रहा है। भाषा का इतिहास यह बताता है कि यदि किसी भाषा को नुकसान होना शुरू हो जाता है वह उस दिन से ही लोप होने के खतरे की सीमा में दाखल हो जाती है, इस लोप होने की प्रक्रिया में समय चाहे कितना भी लग जाए। पर हमारा लक्ष्य भारतीय भाषाओं को केवल लोप होने से बचाने का नहीं होना चाहिए, हमारा लक्ष्य भारतीय भाषाओं इतना विकसित करने का होना चाहिए जितना किसी भाषा का विकास किसी भाषा समूह के सामाजिक, आर्थिक, ज्ञानात्मक और सांस्कृतिक इत्यादि विकास के लिए ज़रूरी होता है। इन क्षेत्रों में मातृ भाषाओं को आधार बनाये बगैर अच्छा विकास नहीं हो सकता। इसलिए आईए हर भारतीय इस सोच को धारण करे और भारतीय भाषाओं को विकसित से विकसित भाषाओं के बारबर का बनाने में अपना योगदान दे।

इस दस्तावेज़ का मकसद दूसरी भाषाओं के महत्व को कम करना नहीं है। आज के युग में एक भाषी होना बहुत बड़ी कमजोरी है। पर दूसरी भाषाओं को मातृ भाषा का स्थान देना भारी शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक नुकसानों का कारण बनता है। इस विषय पर विस्तार से चर्चा मेरी कुछ रचनाओं (जोगा सिंह, २००३, २०१३) में की गई है। यहाँ सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ कि मातृ भाषा माध्यम में शिक्षा के बिना तो विदेशी भाषा भी ठीक से नहीं सीखी जा सकती। यूनेस्को की पुस्तक (यूनेस्को, २००८:१२) से निम्न उक्ति इसका पर्याप्त प्रमाण होना चाहिए:

"मातृभाषा में शिक्षा और विदेशी भाषा की पढ़ाई – तीन अंध विश्वासों का खंडन :हमारे रास्ते में बड़ी रुकावट भाषा और शिक्षा के बारे में कुछ अंधविश्वास हैं और लोगों की आँखें खोलने के लिए इन अंध विश्वासों का भंडा फोड़ना आवश्यक है। ऐसा ही एक अंध विश्वास यह है कि विदेशी भाषा सीखने का अच्छा तरीका यह है कि इसका शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग हो (असल में दूसरी भाषा को एक विषय के रूप में पढ़ना अधिक कारगर होता है)। दूसरा अंधविश्वास यह है कि विदेशी भाषा सीखना जितना जल्दी शुरू किया जाए उतना अच्छा होता है (जल्दी शुरू करने से लहजा तो बेहतर हो सकता है पर लाभ की स्तिथि में वह होता है जो प्रथम भाषा पर अच्छी मुहारत हासिल कर चुका हो।) तीसरा अंधविश्वास यह है कि मातृभाषा विदेशी भाषा सीखने के रास्ते में रुकावट है (मातृभाषा में मजबूत नींव से विदेशी भाषा बेहतर सीखी जाती है)। स्पष्ट है कि ये अंधविश्वास हैं असलियत नहीं, पर फिर भी ये नीति बनाने वालों... इस बात में ...करते है कि प्रभुतात्मक भाषा कैसे सीखी जाए"

जय माँ बोली !

हवाले और टिप्पणियाँ:

Unesco 2003 Language Vitality and Endangerment. Paris: Unesco

Unesco 2008 Improvement in the Quality of Mother-Tongue Based Literacy and Learning. Bangkok: Unesco

सिंह जोगा. २००१ मात भाषा दा महत्व (पंजाबी में). समदर्शी. दिल्ली: पंजाबी अकादमी.

सिंह, जोगा. २०१३. भाषा नीति के बारे में अंतर्राष्ट्रीय खोज: मातृ भाषा खोलती है शिक्षा, ज्ञान, और अंग्रेज़ी सीखने के दरवाज़े. दिल्ली: लोकमित्र.

इस निबन्ध में यूनेस्को (२००३) से बड़ी सहायता और उक्तियाँ ली गई हैं. सभी सारणी यूनेस्को की इसी रिपोर्ट से हैं. इस सब के लिए मैं यूनेस्को का हार्दिक आभारी हूँ.

विलुप्त होती महासू क्षेत्र की प्राचीन लिपियाँ (टौंस यमुना गिरी एवं पब्बर घाटी के सन्दर्भ में)

सुमित राणा
असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास
डी.डी. कॉलेज, देहरादून
ई-मेल: sumitrana26101994@gmail.com

सांस्कृतिक ऐतिहासिक, भौगोलिक और पुरातात्विक वैशिष्टय लिए मध्य हिमालय उत्तराखंड के जनपद देहरादून, टिहरी, उत्तरकाशी में स्थित क्रमशः जौनसार-बावर, जौनपुर, रवांई एवं बंगाण (21º18‘, 31º2‘30‘‘ उत्तरी अक्षांश एवं 77º34‘,78º 18‘30‘‘ पूर्वी देशान्तर) का अतिविशिष्ट व अनुपम क्षेत्र के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश के जनपद सिरमौर, शिमला व कुल्लू (30.56º31º87º उत्तरी अकक्षांश एवं 77º47‘,77.15º पूर्वी देशान्तर) तक विस्तारित रूपिन-सुपिन, टौंस, यमुना, गिरी, पब्बर व ब्यास जैसी नदियों से घिरा यह सम्पूर्ण महासू क्षेत्र जो प्राकृतिक समृद्धता के साथ-साथ उत्कृष्ट कला, परम्पराओ एवं मान्यताओं के आधार पर भी समझने के लिए बहुत समृद्ध व महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसी महासू क्षेत्र में निवासित बामणो (ब्राह्मणों) के घरों में आज आधुनिकतम मुद्रण कला के जमाने में भी सदियों पुराना सांचा पुरा सम्पदा के रूप में मिल जाते है। अधिकांश सांचों की लिपि स्थानीय है। क्योंकि लिपि विज्ञान के अनुसार ब्राह्मी लिपि से उत्तर भारत में शारदा, टांकरी, गुरूमुखी आदि लिपियों का विकास हुआ है। महासू क्षेत्र से प्राप्त सांचे, पंडवाणी, पाबूच, चंदवाणी, भटाक्षरी और भोटी आदि लिपियों में उपलब्ध है ये लिपियां भी शारदा से ही निकली हुई प्रतीत होती है क्योंकि आज भी महासू क्षेत्र के कई सांचों में शारदा, टांकरी लिपि के अक्षरों का प्रयोग प्रत्यक्षतः देखने को मिलता है।

सांचे में वर्णित लिपियों पर शोध करने का मुख्य उद्देश्य है कि सांचे की उत्पत्ति कैसे व कहां हुई और यह किस प्रकार महासू क्षेत्र में आया एवं सांचों में प्रयुक्त होने वाली लिपियां कितनी प्राचीन है व इनका सही कालक्रम क्या है आदि को तथ्य एवं प्रामाणिकता के आधार पर सिद्ध करने का प्रयास करना है।

सांचे में उल्लेखित लिपियों का प्रचलन क्षेत्र

पंडवाणी लिपि का क्षेत्र - पंडवाणी लिपि में लिखे सांचे के प्रयेगकर्ता पंडाण कहलाते है जो मूल रूप से हिमाचल प्रदेश के जिला शिमला में स्थित तहसील चैपाल के ग्राम बलग (देहिया बालसन) के रहने वाले है जो कालांतर में बलग से जौनसार के म्यूंडा और म्यूंडा से थंगाड (हि. प्र.) गये। आज ये ही पंडाण थंगाड के समीप मनेवटी (हि. प्र.) नामक गांव में रहते हैं।

पाबूची लिपि का क्षेत्र - पाबूची लिपि में लिखे सांचे के प्रयोगकर्ता ब्राह्मण पाबूच कहलाते हैं जो

मूल रूप से हिमाचल प्रदेश के जिला सिरमौर में स्थित ग्राम चानना (धार चानना) के रहने वाले है। जो कालांतर में खडकाय (सिरमौरद्ध बांदूर, पबाण (हि. प्र.) डिमिच और जौनसार के कुछ गांव में निवासरत है। आज भी पाबूच ब्राह्म्ण गणाद करने से पूर्व अपने मूल धार चानना की माटिये कहकर स्मरण करते हैं। "स्टेयो सोसाइटी नहान" के अनुसार पाबूची लिपी का सांचा जो 1446 ई0 में लिखा गया था आज भी खडकाय गांव में है जो कि इसकी जीवंत ऐतिहासिकता को प्रदर्शित करता है।

चंदवाणी लिपि का क्षेत्र - चंदवाणी लिपि में लिखे सांचे के प्रयोगकर्ता ब्राह्मण मूल रूप से हिमाचल प्रदेश के जिल शिमला में स्थित तहसील चैपाल के ग्राम देवत भटेऊडी के रहने वाले है जो कालांतर में भटाड (हि. प्र.), मेघाटू, बिजा , चिल्हाड, मंूधौल, भाटगढ़ी के अतिरिक्त जौनसार के अधिकांश ब्राहम्ण गांवों में निवासरत है।

भटाक्षरी लिपि का क्षेत्र - भटाक्षरी लिपि में लिखे सांचे के प्रयोगकर्ता ब्राह्म्ण खदराई (सिरमौर) शूणकूटे टिकरी, पियूत्रा (हि. प्र.) के अतिरिक्त जौनसार के भी कुछ एक ब्राह्म्ण गांव में निवासरत है।

भोटी लिपि का क्षेत्र - भोटी लिपि में लिखे सांचे के प्रयागकर्ता ब्राह्म्ण ब्यास, सतलुज, पब्बर घाटी (हि. प्र.) के कुल्लू और शिमला जिले के कुछ एक गांव में निवासरत है।

सांचे व उसकी लिपियों की उत्पत्ति कहां से हुई है और किस प्रकार से यह महासू क्षेत्र में आया इसके बारे में विद्धानों का एक मत नहीं है सांचा शास्त्र के बारे में उल्लेख करते हुए हिमाचल दर्पण के लेखक डॉ. रूपकुमार शर्मा लिखते है कि मैन्द्रथ नामक स्थान का ब्राह्मण हूणा भाट कश्मीर के किग्गल नामक स्थान के मन्दिर में गया और वहां एक महाशक्ति ने उसे कश्मीरी वेद की एक पोथी दी जो सांचे के रूप में आज महासू क्षेत्रों के ब्राह्मणो के पास मिलती है अधिकांश विद्धान इस मत का समर्थन भी करते है।

हिमाचल अकादमी के सचिव डॉ. तुलसी रमण अपनी पुस्तक हिमाचल प्रदेश का प्राचीन ग्रंथ सांचा में लिखते है कि 11-12वीं सदी में जो कश्मीरी पंडित रानी के साथ आकर सिरमौर के गांवों में बस गये थे यह सांचा विद्या उनकी विरासत है पंडिताई उनका व्यवसाय है। तंत्र-मत्रं-यंत्र और ज्योतिष ज्ञान के माध्यम से वे लोगों की बीमारियों और विभिन्न समस्याओं का समाधान करते थे।

जौनसार बावर के हजारों साल पुराने सांचे जो उक्त लिपियों में लिखो गये थे महासू मन्दिर हनोल में रखे गये है जिनमें फाबटा गाँव के बाह्मणों का सांचा जो तांत्रिक विद्या का सर्वश्रेष्ठ सांचा माना जाता था के साथ-साथ यह भी मान्यता है कि जो ब्राह्मण पथभ्रष्ट होकर अहितकारी कार्यो के लिए अपनी विद्या का दुरूपयोग करने लगे तो उनकी शक्तियों को महासू देवता ने किल्लित कर सम्बन्धित सांचों को जब्त कर लिया।

उक्त शोध अध्ययनों और मान्यताओं से सांचे व उसकी लिपियों की प्राचीनता एवं कश्मीर से सम्बद्धता तो स्पष्ट होती है किन्तु यह लिपियां कश्मीर व महासू क्षेत्र में कहा से आई इस दिशा में कोई ठोस तथ्य और प्रमाणिक जानकारी नहीं है।

आज वर्तमान समय में उक्त लिपियों के स्थान पर कई वशांनुगत विद्धानों के घरों में भी सांचे की लिपियों के स्थान पर हिन्दी के सांचो को प्रयोग में लाया जा रहा है। जिससे उक्त लिपियां व सांचे विलुप्त होने के कगार पर पहुँच गये है। शोध के माध्यम से इसके मूल स्वरूप को लोगो के सामने लाना व संरक्षित करने की दिशा में यह शोधार्थी का प्राथमिक प्रयास होगा।

जाड़ भाषा : एक समाजभाषिक अध्ययन

डॉ. सुमेधा शुक्ला, अजय कुमार सिंह
भाषाविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

सारांश

उत्तराखण्ड राज्य में कई संकटग्रस्त जनजातियाँ निवास करती है। जाड़ जनजाति उन संकटग्रस्त जनजातियों में से एक है। आधिकारिक रिकॉर्ड के साथ-साथ साधारणतया: उन्हें भोटिया कहा जाता है। भोटिया जनजाति मध्य हिमालयी क्षेत्र के प्रमुख उप समूहों में से एक हैं। ऐतिहासिक रूप से यह समुदाय नीलांग और जादोंग घाटियों से संबंधित है और तिब्बत की सीमा के पास उत्तराखंड में जाड़ गंगा नदी के किनारे पर रहते थे। 1962 में भारत और चीन के युद्ध के बाद समुदाय को नीलांग और जादोंग घाटी से उत्तरकाशी जिले के हर्षिल के पास बगोरी और डुंडा गांवों में स्थानांतरित कर दिया गया था। भारत की जनगणना उन्हें अलग-अलग नहीं मानती क्योंकि उनकी कुल आबादी 10 हजार से कम है। उनकी भाषा का नाम भी जाड़ है, जो तिब्बती-बर्मन भाषा परिवार से संबंधित है। जाद, जाध, रोंन्पा, रोंन्मा, भोटिया जनजाति के साथ-साथ भाषा के लिए वैकल्पिक नाम हैं। यूनेस्को की रिपोर्ट में 197 भारतीय भाषाओं को लुप्तप्राय माना जाता है और जाड़ उनमें से एक है।

वर्तमान में यह भाषा क्षेत्र की अन्य प्रमुख भाषाओं से प्रभावित है। जाड़ में लिपि नहीं है और जो लोग अपने मौखिक साहित्य को अच्छी तरह से जानते थे, उनकी मृत्यु हो चुकी हैं। उन्होंने उन गीतों को खो दिया है जो शादियों और अन्य विशेष अवसरों पर गाए जाते थे। हालांकि घर पर पुराने लोग आपस में जाड़ भाषा बोलते हैं, लेकिन युवा पीढ़ी के लोग अत्यधिक मिश्रित विविधता का उपयोग करती है। वार्तालाप के दौरान युवा पीढ़ी के बीच गढ़वाली और हिंदी के प्रभाव को आसानी से सुना जा सकता है। यह क्षेत्र आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक रूप से अधिक शक्तिशाली भाषाओं की तरफ बढ़ रहा है। इस भाषा का अध्ययन उपेक्षित कर दिया गया है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य इस लुप्तप्राय भाषा की समाजभाषिक स्थिति का विश्लेषण करना है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

जाड़ समुदाय के लोग बहुत समय से भारत के उत्तराखंड राज्य के उत्तरकाशी जिले के हर्षिल उप-मंडल में भागीरथी घाटी में 3,400 मीटर की ऊंचाई पर स्थित नीलंग और जादोंग गांवों में रहते थे। ये गाँव तिब्बत (चीन) के सीमावर्ती इलाके में स्थित हैं। चीन से युद्ध (1962) के बाद राष्ट्रीय सुरक्षा कारणों से बाद में इस समुदाय को हर्षिल के निकट बगोरी गाँव में स्थानांतरित कर दिया गया। नीलंग में पैदा हुए और नीलंग में विवाह करने वाली एक वरिष्ठ महिला ने हमें बताया कि पहले नीलंग, जादोंग और बगोरी में उनका निवास था, लेकिन चीन के हमले (1962) के बाद यह समुदाय इस स्थान पर स्थानांतरित हो गया। वर्तमान में वे बगोरी और डुंडा गाँवों में रहते हैं।

1962 तक वे सीमा पार विभिन्न तिब्बती बाजारों में कपड़े, कपास, अनाज, धातु, चीनी, गुड़, ऊन और औषधीय पौधों (जड़ी-बूटी) जैसी वस्तुओं का निर्यात करते थे। बदले में उनसे नमक, सुगागा (बोरेक्स) जैसी वस्तुएँ लेते थे, जो उत्तरकाशी और आसपास के मैदानी इलाकों में बेचते थे। लेकिन भारत और चीन के युद्ध के बाद उनका कारोबार बंद हो गया। साथ ही भारतीय सेना ने उन्हें नीलंग और जादोंग से बगोरी और डुंडा गाँवों में में स्थानांतरित कर दिया गया। जाड़ लोगो के लिए आजीविका का मुख्य स्रोत पशुपालन है। जाड़ महिलाएँ ऊन से बने वस्त्रों की बुनाई में बहुत सक्षम हैं। अन्य व्यवसायों में कृषि और संबद्ध गतिविधियां, व्यापार, अकुशल और अर्द्ध कुशल श्रम और सरकारी सेवा शामिल है। बगोरी में कई परिवारों के सेब के बाग हैं। पहले वे याक भी पालते थे, लेकिन वर्तमान में कुछ ही परिवारों के पास याक हैं और अब ज्यादातर वे लोग भेड़ और बकरियां पालते हैं। वे अपनी भेड़ों से ऊन निकालते हैं और इससे सूत तैयार करते हैं। जाड़ लोग गर्मी के महीनों के दौरान, जब अल्पाइन वनस्पति पूरी तरह से खिलती है तो ऊपरी जाह्वी (जाड़ गंगा) घाटी में अपनी भेड़ और बकरियां चराते हैं। शरद ऋतु में, वे निचली पहाड़ियों पर चले जाते हैं। गांव की देखभाल करने के लिए कुछ लोग ही बगोरी में रहते हैं और ज्यादातर लोग डुंडा में आ जाते है। सर्दियों में इस जगह बर्फबारी होती है। वैसे अब डुंडा में ये लोग ज्यादा रहते हैं, क्योकि यहाँ उन्हें रोजमर्रा की चीजे मिलना ज्यादा आसान है और यह उत्तरकाशी जिला मुख्यालय के नजदीक है।

जातीय रूप से जाड़ लोग तिब्बतियों से अलग हैं। वे इस क्षेत्र के पर्वत निवासी हैं। वे अपनी अलग संस्कृति और सभ्यता के साथ रहते आए हैं, लेकिन वे कभी भी किसी भी मुख्यधारा के धर्म में परिवर्तित नहीं हुए। उनका जीवन हमेशा बहुत कठिन रहा है और 1962 के युद्ध के बाद उन्हें अपने मूल स्थान से स्थानांतरित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस वजह से उन्होंने तिब्बत के साथ अपना कारोबार खो दिया। अब सरकार ने उन्हें अनुसूचित जनजाति (एसटी) श्रेणी के तहत मान्यता दी है और उन्हें कई सुविधाएं प्रदान की जाती हैं, लेकिन अभी ये सुविधाएं उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से ऊपर उठाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

चित्र 1: सर्दियों के मौसम में बगोरी गाँव का दृश्य

जनसंख्या

सरकारी रिकॉर्ड के मुताबिक, 2013 में वीरपुर में मतदाताओं की कुल संख्या 948 थी। बागोरी गाँव के सरपंच (प्रधान) श्री भवन सिंह राणा के अनुसार उनकी जनसंख्या लगभग 2500 और लगभग 400 परिवार है।

शिक्षा

यह समुदाय पहले शिक्षा पर ज्यादा ध्यान नहीं देता था, किन्तु अब वर्तमान समय में इस समुदाय के लोग शिक्षा के प्रति जागरुक है और अपने बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देते है। इनके बच्चों की एक अच्छी संख्या देहरादून में रहकर पढ़ाई और नौकरी सम्बन्धी तैयारी करती है।

चित्र 2: डुंडा गाँव का एक दृश्य

जाड़ भाषा

जाड़ भाषा (आइ.एस.ओ. कोड- jda, 639-3) को यूनेस्को ने संकटग्रस्त भाषाओं की सूची में दुसरे स्तर पर "निश्चित रूप से खतरे में" (Definitely endangered) रखा है। जाड़, तिब्बती भाषा से मिलती, एक अल्पसंख्यक भाषा है। इनकी भाषा पर अन्य नजदीकी भाषाओँ का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। जाड़ लोग अपनी मूल भाषा को रोंन्पा या रोंन्मा कहते हैं। लेकिन उनके पड़ोसियों और सरकारी अधिकारियों ने इसे जाड़ कहा। इस प्रकार जाड़ शब्द का प्रयोग जनजाति के साथ-साथ भाषा के लिए भी किया जाता है। ग्रियर्सन ने जाड़ को स्पीति और अन्य तिब्बती बोलियों से निकटता से संबंधित माना है। यह एक अलिखित भाषा है और जो लोग अपने मौखिक साहित्य को अच्छी तरह से जानते थे, उनकी मृत्यु हो गई है। इन लोगों ने अपने लोक गीत खो दिए हैं, जिन्हें शादियों और अन्य विशेष अवसरों पर गाया जाता था। घर पर बड़े लोग अपने लोगों के बीच जाड़ भाषा बोलते हैं लेकिन युवा लोग इतने सक्षम नहीं होते हैं, या तो वे मिश्रित विविधता का उपयोग करते हैं या वे कोड को स्विच करते हैं। वार्तालाप के दौरान गढ़वाली और हिंदी के प्रभाव को युवा पीढ़ी के बीच आसानी से देखा जा सकता है। पुराने लोग मिश्रण के बिना अपने बीच जाड़ भाषा का उपयोग करते हैं। हमने पाया कि

कॉलेज जाने वाली पीढ़ी इसे मिश्रण किए बिना भाषा का उपयोग नहीं कर पाती है। द्विभाषीकता समुदाय में प्रचलित है और अधिकांश कॉलेज के छात्र त्रिभाषी हैं और वे हिंदी, गढ़वाली और जाड़ भाषाएँ जानते हैं। चिंता का विषय यह है कि वे अपने आप में जाड़ की मिश्रित विविधता का भी उपयोग करते हैं।जाड़ भाषा-भाषी व्यापार, पढ़ाई, नौकरी आदि अन्य कारणों से लोगों के संपर्क में आए, जिससे उनकी भाषा पर भी उसका प्रभाव पड़ा। इस कारण भी उनकी भाषा में भी दूसरी भाषा के शब्द आ गए, कुछ चीजे तो इनके यहाँ थी ही नही, इसलिए इन लोगों ने उसका कुछ नाम न देकर उसे उसी के नाम से ही बुलाना प्रारंभ कर दिया। हिन्दी भाषा के शब्द मूँगफली, कटहल, किताब, गाड़ी, गाजर, अदरक, मूली, नारंगी, डब्बा (box), बिजली, बैगन, ताली (clap), आलू, बाजार, इमली, आम, मंदिर आदि इसी तरह के शब्द है। इन शब्दों में ये अपना भाषा के शब्द मिलाकर बोलते हैं, जैसे - ɪməli ʃe pã (इमली का पेड़), am ʃe pã (आम का पेड़) आदि।

गढ़वाली के शब्द – चटकनी (bolt), मकइ (maize), बंडी (vest) आदि।

अंग्रजी- कार (कार), मोबाइल (mobile) आदि।

धर्म

जाड़ लोग तिब्बती बौद्ध धर्म के अनुयायी रहें हैं लेकिन हिंदू प्रभाव आसानी से देखा जा सकता है। अब वे दोनों धर्मों की पूजा करते हैं। वे कई हिंदू देवताओं और अनुष्ठानों में विश्वास का दावा करते हैं, और जोर देते हैं कि वे तिब्बतियों से जातीय रूप से अलग हैं। भोटिया मूल के बावजूद, लंबे संपर्क के कारण जाड़ लोगों ने गढ़वाली संस्कृति और जातीयता के विभिन्न तत्वों को भी शामिल किया है। उनमें से कई नेगी, राणा और पंवार आदि जैसे गढ़वाली उपनामों का उपयोग करते हैं। जाड़ गांव में पैदा हुए लोगों में बाहर हमेशा से आने वाले लोगों से श्रेष्ठता की भावना होती है।

त्यौहार एवं रीति-रिवाज

जाड़ लोग बौद्ध नव वर्ष 'लोसर' मनाते हैं और अपने घरों के ऊपर प्रार्थना झंडे लटकाते हैं। हिंदू कैलेंडर के अनुसार यह फाल्गुन के अमावस्या में आता है। यह चार दिनों के लिए मनाया जाता है। पहले दिन वे मशाल, दीपक, मोमबत्तियां और दीयाओं को जलाते हैं। अगले दिन वे 'हरेली' नामक उपहार अपने पड़ोसियों को देते हैं। दूसरे और तीसरे दिन वे पड़ोसियों और रिश्तेदारों को उनके घर में आमंत्रित करते हैं। इस अवसर पर विवाहित लड़कियां अपने माता-पिता के घर आती हैं। चौथे दिन वे एक-दूसरे पर फेंककर गेहूं के आटे के साथ खेलते हैं। सितंबर के महीने में वे 'लाल देवता' की पूजा करते हैं। इस दिन वे लाल देवता की पूजा करने के लिए बकरी और भेड़िया की बलि देते हैं। वे 'पांडव नृत्य' भी करते हैं। पांडवों को वे कुलदेवता के रूप में पूजते है। हर साल अप्रैल के महीने में, डुंडा स्थित मंदिर की 'रिंगाली देवी' की पूजा की जाती है। बौद्ध लामा उनके धार्मिक समारोहों और चिकित्सा उपचार करने के लिए नियोजित थे। अब वे बौद्ध त्योहारों के साथ विभिन्न हिंदू त्योहारों को भी मनाते है।

चित्र 3: पांडव नृत्य का एक दृश्य

वर्तमान समाजभाषिक स्थिति

इनके क्षेत्र में काम के दौरान हमने विभिन्न आयु, लिंग और शैक्षिक पृष्ठभूमि के वक्ताओं से संपर्क किया क्योंकि हम कुछ उत्साही और सहयोगी सूचनार्थियों की तलाश में थे। आखिरकार बारह पुरुष और तेरह महिला वक्ताओं में से हमने भाषा डाटा एकत्र किया-

भाषिक पहचान

प्रश्न	हाँ	नहीं
1. क्या आपकी भाषा का लिखित स्वरुप हैं?	0%	100%
2. क्या आपकी मातृ भाषा में किसी पुस्तक का प्रकाशन हुआ हैं?	0%	100%
3. क्या आपकी मातृ भाषा का भाषायी /सांस्कृतिक संगठन हैं?	0%	100%
4. आप अपनी भाषा लिखने के लिए किस लिपि का प्रयोग करते हैं? देवनागरी या रोमन	100% देवनागरी	0%
5. क्या आप कभी महसूस करते है कि आपकी मातृभाषा मर रही है?	60 %	40 %

भाषा अभिवृति

प्रश्न	हाँ	नहीं
1. क्या आपकी भाषा/मातृभाषा को सीखना/बोलना आसान है?	20%	80%
2. क्या आप अपने विचार अपनी मातृभाषा में व्यक्त कर सकते हैं?	100%	00%
3. क्या आप दूसरी भाषा के शब्दों को अपनी मातृभाषा में मिलाना स्वीकार करते हैं?	100 %	00 %
3.1 यदि हाँ तो, किस भाषा/भाषाओं के साथ?	हिंदी, अंग्रेजी, गढ़वाली	
4. यदि आपको अवसर दिया जाये तो क्या आप अपनी मातृभाषा को लिखना चाहेंगे?	80 %	20 %

5. क्या आप सोचते हैं की विभिन्न क्रियाकलापों जैसे व्यवसाय, रोजगार, शिक्षा आदि के लिए आपकी भाषा ज्यादा उपयुक्त है?	00 %	100 %
6. क्या आप सोचते हैं की दूसरी भाषाएँ सीखना आसान है?	100 %	00 %
6.1 यदि हाँ तो, कौन सी भाषा/ भाषाएँ?	हिंदी, गढ़वाली, अंग्रेजी	
7. क्या आप सोचते हैं की एक भाषा सभी प्रकार के उपयोग के लिए काफी है?	80 %	20 %
7.1 यदि नहीं तो, अन्य कौन सी भाषा/ भाषाएँ शामिल होनी चाहिए?	हिंदी, गढ़वाली, अंग्रेजी	
8. क्या आप सोचते हैं की दूसरी भाषाएँ सीखना आपका ज्ञान स्तर बढ़ाता है?	80 %	20 %
9. क्या आप अपने बच्चों द्वारा अपनी भाषा बोलना पसंद करते हैं?	100 %	00 %
10. क्या आप अपनी मातृभाषा वैसा ही बोलते है जैसा आपके माता-पिता आपकी मातृभाषा बोलते?	80 %	20 %
11. क्या आप सोचते है कि आपकी भाषा दैनिक क्रिया-कलापों के लिए आवश्यक है?	60 %	40 %
12. क्या आप कभी महसूस करते है कि आपकी मातृभाषा मर रही है?	60 %	40 %
13. आप अपने बच्चों को कौन सी भाषाएँ सिखाना चाहते हैं?	जाड़, हिंदी, अंग्रेजी	

भाषा प्रयोग के सन्दर्भ

1.	अपने घर में आप कौन सी भाषा/ भाषाएँ बोलते है?	
1.1	अपने दादा-दादी के साथ?	जाड़/ हिंदी
1.2	अपने पति-पत्नी के साथ?	जाड़/ हिंदी
1.3	अपने बच्चों के साथ ?	जाड़/ हिंदी
1.4	अपने नाती-पोतों के साथ?	जाड़/ हिंदी
1.5	अपने भाइयों-बहनों के साथ?	जाड़/ हिंदी
1.6	अपने पालतू जानवरों के साथ?	जाड़/ हिंदी
2.	अपने विद्यालय / स्कूल में आप कौन सी भाषा/ भाषाएँ बोलते है?	
2.1	कक्षा में अपने अध्यापक के साथ?	हिंदी
2.2	कक्षा के बाहर अपने अध्यापक के साथ?	हिंदी
2.3	कक्षा में अपने समुदाय के दोस्तों के साथ?	जाड़/ हिंदी
2.4	कक्षा में दुसरे समुदाय के दोस्तों के साथ?	हिंदी/ गढ़वाली
2.5	कक्षा के बाहर अपने समुदाय के दोस्तों के साथ?	जाड़/ हिंदी
2.6	कक्षा के बाहर दुसरे समुदाय के दोस्तों के साथ?	हिंदी/ गढ़वाली
3.	बाजार में आप कौन सी भाषा/ भाषाएँ बोलते है?	
3.1	अपने समुदाय के दुकानदार साथ?	जाड़/ हिंदी

3.2	दुसरे समुदाय के दुकानदार के साथ?	हिंदी/ गढ़वाली
4.	अपने पूजा स्थल पर आप कौन सी भाषा/ भाषाएँ बोलते है?	जाड़/ हिंदी/ गढ़वाली
5.	अपने सामुदायिक सभा के दौरान आप कौन सी भाषा/ भाषाएँ बोलते है?	जाड़/ हिंदी
6.	किसी अजनबी के साथ आप कौन सी भाषा/ भाषाएँ बोलते है?	हिंदी/ गढ़वाली
7.	डॉक्टर से आप कौन सी भाषा/ भाषाएँ बोलते है?	हिंदी/ गढ़वाली
8.	कक्षा के बाहर अपने समुदाय के दोस्तों के साथ?	जाड़/ हिंदी
9.	कक्षा के बाहर दुसरे समुदाय के दोस्तों के साथ?	हिंदी/ गढ़वाली
10.	क्या आपकी भाषा जनसंचार माध्यमों (रेडियो, टीवी, अखबार इत्यादि) में प्रयोग होती है?	नहीं

निष्कर्ष

अंततः शोध निष्कर्ष इस प्रकार है कि भाषा में जो भी परिवर्तन देखे गए है वह कई कारणों की वजह से उत्पन्न हुए है, उसमे मुख्य कारण है- भाषा प्रयोग क्षेत्र का संकुचीकरण, बोलने वालों की उदासीनता, भाषा प्रतिष्ठा आदि। एकत्रित जानकारी से पता चलता है कि यद्यपि समुदाय दो बस्तियों में स्थित है। देहरादून में रहने वाले कई युवा लोग हैं। वे या तो नौकरी से सम्बंधित प्रतियोगिताओं के लिए तैयारी कर रहे हैं या कुछ निजी या सरकारी नौकरी कर रहे हैं। नतीजतन जाड़ भाषी बाजार आदि स्थानों पर संवाद करने के लिए गढ़वाली-हिंदी मिश्रित भाषा का उपयोग करते हैं। उनमें से कुछ अंग्रेजी में भी बातचीत कर रहे हैं लेकिन चिंता की बात यह है कि वे अपनी मूल भाषा को भूल रहे हैं। पूरा समुदाय द्विभाषी/ बहुभाषी है और तेजी से क्षेत्र की प्रमुख भाषा की तरफ स्थानांतरित हो रहा है। माता-पिता जाड़ भाषा को युवाओं में पूरी तरह से स्थानांतरित नहीं कर पा रहे हैं। इस जनजातीय भाषा के विकास में लिखित रूप की अनुपस्थिति भी नकारात्मक भूमिका निभा रही है। जाड़ अब मुख्य रूप से बुजुर्ग लोगों द्वारा बोली जाती है। युवा पीढ़ी केवल जाड़ शब्दों की सीमित ही जानता है। वे हिंदी का उपयोग करना पसंद करते हैं और अपनी मूल भाषा सीखने में अनिच्छुक हैं। भाषा में कोई लिपि नहीं है और जो लोग अपने मौखिक साहित्य में अच्छी तरह से जानते थे, उनकी मृत्यु हो गई है। इस जनजातीय भाषा के विकास में लिखित रूप की अनुपस्थिति भी नकारात्मक भूमिका निभा रही है। उन्होंने विभिन्न अवसरों पर गाए गए गीत खो दिए हैं। युवा लोग कस्बों में काम कर रहे हैं और जाड़ की बजाय हिंदी बोलते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

सुरेश मंमगई : मध्य हिमालय की जाड़ जनजाति का सांस्कृतिक संघर्ष

Sharma, D.D. (1990). Tibeto-Himalayan Languages of Uttarakhand. New Delhi: Mittal Publications. pp. 1– 90.

S. M. Channa (2005). The Descent of the Pandavas: Ritual and Cosmology of the Jads of Garhwal. European Bulletin of Himalayan Research 28: 67-87.

आभार: हम भारतीय भाषा संस्थान ,मैसूर के आभारी है की उन्होंने SPPEL प्रोजेक्ट के अंतर्गत , भाषा विज्ञान विभाग, लखनऊ के माध्यम से हमको इस कार्य का अवसर प्रदान किया ।

Verb Agreement in Raji of Nepal

Ramesh Khatri
mmpdkhatri@gmail.com

Abstract

Pronominalization or verb agreement is a common morpho-syntactic phenomenon in Himalayan branch of Tibeto-Burman languages. The Raji data exhibits that the agreement system is largely based on person hierarchy, with first- and second-person taking precedence over third person. Furthermore, the language shows that the agreement for person and number are partly independent since number of the patient is marked on the verb independently on the person. In addition, the Raji language displays an agreement system which has been thought to be rare across language

Raji and its speakers

Raji is a lesser-known Tibeto-Burman language spoken by a small number of speakers in the Mid-western and Far-western regions of Nepal. The linguistic maps of Nepal displaying the Raji speaking area are as follows:

Figure 1: Linguistic map of Nepal

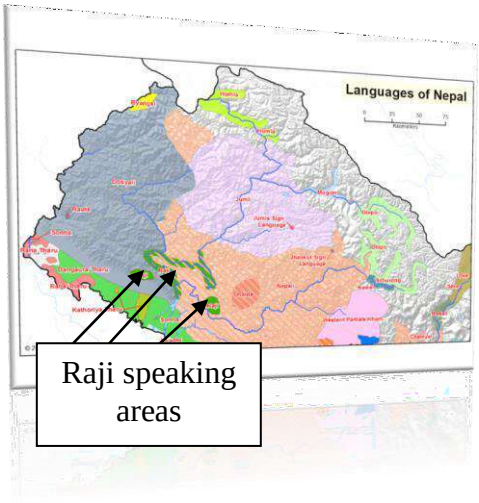

Figure 2: Raji speaking areas in western Nepal

According to the 2011 census, the ethnic population of the Raji is 4,235 while the mother tongue speakers are 3,758 in the country. Although many parents want to transmit the Raji language to their children, the transmission is in fact weakening. Because of the heavy dominance of Nepali speaking society the Raji speakers are shifting to *Nepali*, which is the language of wider communication. As a consequence, the language is losing

many of its important domains of use and is rated by the *Ethnologue: Languages of Nepal* as a threatened language.

Language affiliation and some typological characteristics of Raji

Regarding the genetic affiliation of Raji it is not still ascertained. Grierson and Konow (1909) categorize *Janggali*[1] (Raji) as a member of western sub-group of complex pronominalized group under Himalayan branch of Tibeto-Burman family. According to Matisoff (1995), as quoted in Rastogi (2006), *Rawati* or Raji probably belongs to west-central Himalayan section of the Bodic division of Sino-Tibetan language family. Similarly, Breton (1997) categorizes Raji under the western *Kiranti* group (Eastern Himalayan branch). And, Noonan (2005) classifies Raji into *Kham-Magar* subgroup within Tibeto-Burman subfamily of Sino-Tibetan language family.

Some of the interesting linguistic features of Raji are as follows:

a) The constituent order is Subject (S), Object (O) and Verb (V) with a rather strict order of modifiers before heads.
b) Verbs in Raji can contain a stem preceeded by a prohibitive marker and usually followed by several other suffixes like aspect, tense, mood, agreement and negation.
c) The personal pronouns representing the agent (in intransitive and transitive verbs) and the patient (intransitive verbs) of the sentence are marked on the verb based on person hierarchy.
d) Tense contrasts for the same day or the other day. If an action happens on the same day there is a *–k* marker on the verb.
e) Raji nouns inflect for singular, dual and plural.

Previous work on Raji

So far, there is no reference grammar of Raji. Previous studies have focused on some aspects of the language such as:

f) Sociolinguistic studies (G. Giri 2002)
g) Phonetics and phonology (J. Giri 2000)
h) Morpho-syntax (Krishan 2001, Rai 2008, Khatri 2008 and Khatri 2009)
i) Lexicon (G. Giri 2002)

Fieldwork and data

I have been working on the language since my MA studies. In 2008, I wrote a dissertation on "The structure of verbs and sentences of Raji" and published *Causativization in Raji* (2009), *Notes on the Raji verbs* (2011) and *Negativization in Raji* (2012) in Nepalese journals. So far, I have been to the field study five times and collected an important amount of data using:

a) the sociolinguistic questionnaire developed by the *Linguistic Survey of Nepal*;
b) the list of sentences prepared by the Central Department of Linguistics, Tribhuvan University;
c) audio recording of natural texts from different genres; and d) the "Trajectoire" elicitation material developed by Ishibashi, Kopecka and Vuillermet (2006).

[1] *Janggali* is a derogatory term. It is discarded to be used by the Raji. Rather the term Raji is an acceptable name for them. However, they prefer to use *phan boli* or *phan bhasha* to refer to their heritage language.

This presentation is mainly based on elicited data that have been checked against naturally occurring data.

Verb agreement

Verb agreement is the matter of the "presence or absence of a verbal affix system for person-number argument which is criterial for designing a language as pronominalized or not" (Bauman 1974:131). Regarding person agreement especially the person hierarchy Siewierska (2004:149) states that "when less than three persons are involved, the person hierarchy leads us to expect person agreement with just the first person or with just the first and second persons. The former is very uncommon."

As we will see later, Raji has a complex verb agreement system. Like other Tibeto-Burman languages, Raji distinguishes morphologically person and number and indexation on the verb depends on person. As noted by DeLancey (2010) for Tibeto-Burman languages, this agreement system is based on person hierarchy rather than semantic role or grammatical relation. He further states that recent descriptive and historical work on Tibeto-Burman has shown that in the person hierarchy first and second person are always indexed in preference to third. Marking first person is clearly preferred in Raji.

5.1. Personal pronouns in Raji

Before analyzing verb agreement in Raji, let's first look at the Raji personal pronouns. Raji has a set of independent first, second and third-person pronouns in singular, dual and plural. The first person and second-person pronouns are *ŋa* 'I' and *naŋ* 'you' in Raji. The second person can combine with dual and plural affixes to mark honorificity. The third person has a set of three pronouns depending upon the distance to the speaker: proximal, distal and remote. The proximal, distal and remote pronouns are *in, ɦun* and *an*, respectively.

As for number, the singular is an unmarked category. The dual marker for the first and second person is *–dzi* and for the third person *-giŋ*. The plural marker is *–i* for the first person, *-ni* for the second person and *–la* for the third person pronouns. The personal pronouns in Raji are presented in Table 1.

Person \ Number		Singular		Dual	Plural
First person		*ŋa/na*[2] 'I'		*ŋʌ-dzi* 1 DU 'we (two)'	*ŋʌ-i* 1 PL 'we (more than two)'
Second person		**LHON**	*nʌŋ* 'you'	*nʌŋ-dzi* 2 DU 'you (two)'	*nʌŋ-ni* 2 PL 'you (more than two)'
		MHON	*nʌŋ-dzi* 2 DU 'you'		
		HHON	*nʌŋ-ni* 2 PL 'you'		
Third person	**Proximal**	*in* 'this'		*in-giŋ* 3 DU 'these (two)'	*in-la* 3 PL 'these' (more than two)
	Distal	*ɦun* 'that'		*ɦun-giŋ* 3 DU 'those (two)'	*ɦun-la* 3 PL 'those (more than two)'
	Remote	*an* 'that'		*an-giŋ* 3 DU 'those (two)'	*an-la* 3 PL 'those (more than two)'

Table 1: Personal pronouns in Raji (Khatri 2009)

Verb agreement in Raji

The first person, be it an Agent (A) or a Patient (P), is always marked on the verb for person and, in case of dual and plural for number. The second and third person behave differently than the first person. However, in order to understand the verb agreement in Raji, we need to make distinction between intransitive and transitive clauses since Raji has a different mechanism for intransitive and transitive verbs.

Intransitive verb agreement in Raji

Generally, in intransitive clauses, person and number are marked on the verb. However, there are some differences depending upon the person and the number. While the first person is marked for both number and person (except for singular which is not marked), there is no agreement for second and third person; only the number (dual and plural) are marked. Table 2 presents the intransitive verb agreement paradigm.

[2] The first- person pronoun has two forms depending upon dialectical variation. The majority of Raji speakers use *ŋa* and a few speakers use *na* for first person.

Number / Person	Singular	Dual	Plural
1st person	*V-ŋ*	*V-tsi-ŋ*	*V-i-ŋ*
2nd person	*V-ø*	*V-tsi*	*V-i*
3rd person	*V-ø*	*V-tsi*	*V-i*

Table 2: Intransitive verb agreement affixes in Raji

Examples (1) - (3) show the agreement for person. In example (1), there is the affix indexing the first person, and the singular is not marked. In examples (2) and (3), the affix indexing the first person is preceded by number, dual in (2) and plural in (3).

(1) *ŋa nʌmɦa swakŋ*[3]

ŋa	nʌm	-ɦa	swa	–k	-ŋ
1	house	LOC	go	SD	1

'I go home.'

(2) *ŋʌdzi nʌmɦa swakɨtsĩ*

ŋʌ	-dzi	nʌm	-ɦa	swa	–k	–ɨ	–tsi	-ŋ
1	DU	house	LOC	go	SD	NPST	DU	1

'We (two) go home.'

(3) *ŋʌi nʌmɦa swakĩ*

ŋʌ	-i	nʌm	-ɦa	swa	–k	-i	-ŋ
1	PL	house	LOC	go	SD	PL	1

'We (more than two) go home.'

In contrast, examples (4) and (5) illustrate the lack of agreement for the second and third person.

(4) *nʌŋ rʌika*

nʌŋ	rʌi	-k	-a
2	laugh	SD	PST

'You laughed.'

[3] *-ŋ* is the first- person marker on the verb. It is realized as nazalization after attaching to a vowel.

(5) *ɦun rʌika*

ɦun	rʌi	-k	-a
3	laugh	SD	PST

'He laughed.'

Transitive verb agreement in Raji

Transitive verbs tend to require agreement for both agent and patient; however, the agreement depends on person. In example (6), the first person (which is the agent) is marked by the suffix *–ŋ* where it is realized on a vowel as a form of nasalization; and the second person (which is the patient) is marked by *–na.* The marker *–na* shows that the first person acts upon the second person. In examples (7) and (8), it acts upon the second person too, however, because patient is either dual as in (7) or plural as in (8) number is marked too (*-dzi* for dual and *–ni* for plural).

(6) *ŋa nʌŋ mokk^{h}[4]ãna*

ŋa	nʌŋ	mok	-k^{h}	-a	-ŋ	-na
1	2	beat	SD	PST	1	2

'I beat you.'

(7) *ŋa nʌŋdzi n^{h}imiŋ mokkãnadzi*

ŋa	nʌŋ	-dzi	n^{h}imiŋ	mok	-k	-a	-ŋ	-na	-dzi
1	2	DU	two	beats	SD	PST	1	2	DU

'I beat you (two).'

(8) *ŋa nʌŋni mokk^{h}ãnani*

ŋa	nʌŋ	-ni	mok	-k^{h}	-a	-ŋ	-na	-ni
1	2	PL	beat	SD	PST	1	2	PL

'I beat you (more than two).'

In example (9), however, there is no *-na* marker on the verb. Only the agent first-person and its number are marked on the verb for the agreement.

[4] The same day marker *-k* gets aspirated probably due to some phonological reasons.

(9) *ŋʌi nʌŋ mokkhĩ*

ŋʌ	-i	nʌŋ	mok	-k^{h}	-i	-ŋ
1	PL	2	beat	SD	PL	1

'We beat you.'

These examples seem to suggest that the patient second person is indexed on the verb only in the situation where the agent is first person singular. However, this needs to be checked on a larger number of data.

But, if the patient is the third person there is no agreement for person; only number is indexed on the verb. So, in example (10), the agent is marked by the first person affix *–ŋ*. Likewise, in example (11) *-ŋ* indexes the agent and *–tsi* the number for the patient.

(10) *ŋa ɦun mokkĩ*

ŋa	ɦun	mok	-k	-i	-ŋ
1	3	beat	SD	NPST	1

'I beat him.'

(11) *ŋa ɦungiŋ mokkĩtsi*

ŋa	ɦun	-giŋ	mok	-k	-i	-ŋ	-tsi
1	3	DU	beat	SD	NPST	1	DU

'I beat them (two).'

In example (12), where agent is second person singular and patient is first-person plural, the agent is not indexed on the verb, and patient is marked for both person (*-ŋ*) and number (*-i*).

(12) *nʌŋi ŋʌi mokkĩ*

nʌŋ	-i	ŋʌ	-i	mok	-k	-i	-ŋ
2	ERG	1	PL	beat	SD	PL	1

'You beat us (more than two).'

Finally, examples (13), (14) and (15) show that when agent is second or third person, the patient is marked for number only.

(13) *nʌŋi ui mokku*

nʌŋ	-i	ui	mok	-k	-u
2	ERG	3	beat	SD	DIR

'You beat him.'

(14) *nʌŋi ɦungiŋ mokkutsi*

nʌŋ	-i	ɦun	-giŋ	mok	-k	-u	-tsi
2	ERG	3	DU	beat	SD	DIR	DU

'You beat them (two).'

(15) *nʌŋnii ɦun mok^{h}ke*

nʌŋ	-ni	-i	ɦun	mok	-k	-e
2	PL	ERG	3	beat	SD	PL

'You (more than two) beat him.'

Table 3 presents the verb agreement system for transitive clauses. The table also shows an interesting fact that when first-person dual is agent and third person is patient *–dzo* is indexed on the verb. On the other hand, when first-person dual is agent and the second person is patient *–tso* is indexed on the verb. Both of them index dual agent and patient arguments. So, they seem to be allomorphs. Whereas *–tsi* indexes dual agent and patient arguments.

There is difference between intransitive and transitive clauses since in intransitive clauses only the first person is indexed on the verb while for transitive clauses both the first and second person are indexed on the verb. However, it is important to underly that the second person is indexed on the verb only in the case in which first-person singular acts as agent. Whereas the first person is marked for both agent and patient.

P A	1SG	1DU	1PL	2SG	2DU	2PL	3SG	3DU	3PL
1SG				*ŋ-na*	*-ŋ-na-dzi*	*-ŋ-na-ni*	*-ŋ*	*-ŋ-tsi*	*-ŋ-si*
1DU				*-tso-ŋ*	*-tso-ŋ*	*-tso-ŋ*	*-ŋ-dzo*	*-ŋ-dzo*	*-ŋ-dzo*
1PL				*-e-ŋ*	*-e-ŋ*	*-e-ŋ*	*-e-ŋ*	*-e-ŋ*	*-e-ŋ*
2SG	*-ŋ*	*-ŋ-tsi*	*-i-ŋ*				*-u*	*-u-tsi*	*-u-si*
2DU	*-ŋ*	*-ŋ-tsi*	*-i-ŋ*				*-u-tso*	*-u-tso*	*-u-tso*
2PL	*-ŋ*	*-ŋ-tsi*	*-i-ŋ*				*-e*	*-e*	*-e*
3SG	*-ŋ*	*-ŋ-tsi*	*-i-ŋ*	*-ø*	*-tsi*	*-i*			
3DU	*-ŋ*	*-ŋ-tsi*	*-i-ŋ*	*-ø*	*-tsi*	*-i*			
3PL	*-ŋ*	*-ŋ-tsi*	*-i-ŋ*	*-ø*	*-tsi*	*-i*			

Table 3: Transitive verb agreement affixes in Raji

Conclusion

Pronominalization or verb agreement is a common morpho-syntactic phenomenon in Himalayan branch of Tibeto-Burman languages and Raji illustrates these typological characteristics.

The data presented in this paper shows that in intransitive clauses the first and second person are indexed for both person and number; the third person is indexed for number but not for person, as shown in Table 4.

Agreement / Agent	Person	Number (dual, plural)
1	√	√
2	–	√
3	–	√

Table 4: Intransitive verb agreement system in Raji

In transitive clauses, both the first person (agent and patient) and the second person patient are marked for the person. The verb agreement system for transitive clauses can be summarized as follows:

- 1st person Agent/Patient are both marked for person and number.
- 2nd person Agent is not marked for person whereas Patient is marked for person. However, both Agent and Patient are marked for number.
- 3rd person Agent is not marked, and Patient is not marked for person but is marked for number.

The Raji data shows that the agreement system is largely based on person hierarchy, with first- and second-person taking precedence over third person. Furthermore, these data show that the agreement for person and number are partly independent since number of the patient is marked on the verb independently on the person.

Hence, Raji displays an agreement system which has been thought to be rare across languages. Further, (and more extensive discourse-based) exploration of the Raji system (and perhaps other closely-related languages) will allow for a better understanding of this system. For example, it is necessary to explore next whether there are specific conditions for the use of this agreement system such as tense, aspect, and mood.

Abbreviations

1	First person	LHON	Low Honorific
2	Second person	MHON	Mid honorific
3	Third person	NPST	Non-past
A	Agent	P	Patient
DIR	Direction marker	PL	Plural
DU	Dual	PST	Past
ERG	Ergative	SD	Same day
HHON	High honorific	SG	Singular

References

Bauman, Jim. 1974. "Pronominal verb morphology in Tibeto-Burman". *Linguistics of the Tibeto-Burman Area* 1,1:108-155.

Breton, R. J -L. 1997. Atlas of the languages and ethnic communities of South Asia. New Delhi / Thousand Oaks / London: Sage Publications.

DeLancey, Scott. 2010. "Towards a history of verb agreement". *Himalayan Linguistics* 9, 1:1-39.

Eppele, John, Lewis, Paul. W., Regmi, Dan. R., & Yadava, Yogendra P. (ed.). 2012. *Ethnologue: Languages of Nepal*. Kathmandu: Linguistic Survey of Nepal (LinSuN).

Giri, Goma. 2002. Raji ra Nepali bhashako tulatnatmak adhyayan (A comparative study of Raji and Nepali languages). MA: TU dissertation.

Giri, Jivendra D. 2000. Raji bhashako khojkhabar (The investigation into the Raji Language). *Muktimorcha* 27.16.58-61.

Grierson, George A. & Konow, Sten. 1909. *Linguistic survey of India*. Vol.III Part I. Delhi /Venarasi / Patna: Motilal Banarsidas.

Ishibashi, M., Kopecka, A. & Vuillermet, M. 2006. "Trajectoire : matériel visuel pour élicitation des données linguistiques", Fédération de Recherche en Typologie et Universaux Linguistiques. France : CNRS.

Khatri, Ramesh. 2008. The structure of verbs and sentences of Raji. Kathmandu, MA: TU dissertation.

Khatri, Ramesh. 2009. "A linguistic analysis of the verbal morphology of Raji". Unpublished manuscript.

Krishan, Shree. 2001. "A sketch of Raji grammar". In: Nagano, Y. & LaPolla, R. (ed.), *The Tibeto-Burman Languages of Uttar Pradesh (Volume II) of New Research on Zhangzhung and Related Himalayan Languages (Senri Ethnological Reports 19) 449-501*.

National population and housing census 2011 (National report). 2012. Kathmandu: Central Bureau of Statistics.

Noonan, Michael. 2005. Language documentation and language endangerment of Nepal. University of Wisconsin-Milwaukee. http:// www.uwm. edu l~noonan

Rai, Purna P. 2008. A sketch grammar of Raji. Kathmandu, MA: TU dissertation.

Rastogi, Kavita. 2006. "Language obsolescence: An assessment of *Rawati bhasha*". *Chintana* 1:51-57.

Siewierska, Anna. 2004. Person. Cambridge: Cambridge University Press.